

JAN
SATYAGRAH
.in

Your Point of
View to Beat
Lies & Cries

Home

Quick View

Core Issues

Explore

Like 3.3K

Follow

3,279 followers

Search...

आर्मी चीफ जनरल बिपिन रावत के कड़वे घूँट वाले इस बयान के मायने

Image credit: Indian Express

In Commentary

June 02, 2017

5 minutes read



Bodhayan Sharma

2445

Total
Engagement

Top Picks



**Matter-Of-Fact: The
Reluctance By State Govts
For Police Reforms**

Jan-Satyagrah Desk



**The Importance Of
Protecting Our Gurus**

Rajiv Malhotra



**यूनिफार्म सिविल कोड से क्यों
डरें ?- कमर वहीद नकवी**

Jan-Satyagrah Desk



**Intellectual Militancy -
The Another Kind Of
Terrorism**

Jan-Satyagrah Desk

बेटा तैयार हुआ, आशीर्वाद लिया और निकल गया देश सेवा के लिए. पूरे परिवार को छोड़ कर. खुद के बच्चों को सोता हुआ छोड़ कर, माँ-बाप-भाई-बहन सबको अगली बार आने का वादा कर. लेकिन इस बार उसके मन में देश भक्ति का ख्याल तो है, कहीं अन्दर यही सोच भी है कि बॉर्डर पर जा रहा हूँ, लड़ने. जानते हुए कि उसकी ड्यूटी इस बार लगी है, जम्मू कश्मीर में. अपने ही कश्मीरियों के बीच जंग करने जा रहा है. जहाँ ये कहना आसान नहीं है कि कौन वफादार है और कौन दगाबाज?

जम्मू कश्मीर का माहौल हमेशा से ही तनाव भरा रहा है. वहाँ झेलम, घाटी की बर्फ अक्सर लाल ही रहती है. कभी आतंकवादियों की नापाक करतूतों से तो कभी भारतीय सेना के जवानों के लहू से. अब पिछले कुछ समय में वहाँ एक अलग ही तरह की जंग से सामना कर रहे हैं भारतीय सैनिक. वो हैं वहाँ के लोग, जो सेना का ही विरोध कर रहे हैं और उन्हीं पर पत्थर बरसा रहे हैं. इसे सीधे तौर पर आन्तरिक विरोध भी कह सकते हैं.

कश्मीर की घाटियाँ आजकल रोज रंग बदलती नज़र आ रही है. वहाँ कभी पकिस्तान के झंडे नज़र आते हैं तो कभी पाकिस्तानी राष्ट्रगान गाया जाता है, कभी "Go back india, We will join Pakistan !" जैसे नारे घाटियों में गूँज उठे हैं. लोगों का विरोध इतना हो गया था कि सेना पर एसिड बम, पट्रोल बम और पत्थर उठा लिए जाते हैं.

Video

इसके विरोध में पैलेट गन का भी इस्तेमाल किया गया तो कुछ कथित ह्यूमन राइट लॉबी इसका विरोध किया और सेना के विरोध में कोर्ट तक चले गए. सुप्रीम कोर्ट ने भी मामूली सख्ती दिखाते हुए स्पष्ट किया कि यदि वे आश्वासन दें कि अगर बच्चे और औरतों को आगे कर पत्थर और एसिड बम नहीं उठाये तो पैलेट गन का इस्तेमाल बंद कर दिया जायेगा. लॉबी अभी तक आश्वासन नहीं देने की स्थिति में नहीं है.

लेकिन सेना के जवानों के हेलमेट उछालकर अपमान करने और मेजर गोगोई पर गन्दी सियासत के बाद अब लगता है कि अभी सेना ने नरमरूख गाँधीवाद रवैय्ये से तौबा कर ली है. पहले जो होता था उसके साथ समझौता कर लिया जाता था या राजनैतिक हस्तक्षेप के बाद मुद्दे को जबरदस्ती दफ़न कर दिया जाता था. अब सेना ने सामने आ कर इस समस्या को जवाब देने का फैसला कर लिया लगता है. भारतीय थल सेना प्रमुख बिपिन रावत का एक बयान आया और सभी विरोधियों के चेहरे पर हवाईयां उड़तीं नजर आ रही हैं. सभी को हक्का-बक्का कर देने वाले इस कड़वे घूँट वाले असल मायने क्या हैं?

इस बार सेना प्रमुख बिपिन रावत का गुस्सा उनके हर लफ़्ज़ में दिखाई दे रहा है, उन्होंने शुरुआत ही कुछ ऐसे कि जैसे उनकी बातों से ही गुनहगारों को मौत आ जाये या जो अगली बार घाटी में पत्थर उठाने की सोच भी रहा हो वो अपना इरादा बदल ले. उन्होंने कहा कि मैं मेरे जवानों को पत्थरों और पेट्रोल बम के सामने बुत बन कर खड़े रहने के लिए नहीं बोल सकता. मैं नहीं कह सकता उन्हें कि वो वहां एक तरह से आत्महत्या कर लें.

“लोग हम पर पथराव कर रहे हैं, पेट्रोल बम फेंक रहे हैं. ऐसे में जब मेरे कर्मी मुझसे पूछते है कि हम क्या करें तो क्या मुझे यह कहना चाहिए कि बस इंतजार करिए और जान दे दीजिए? मैं राष्ट्रीय ध्वज के साथ एक अच्छा ताबूत लेकर आऊंगा और सम्मान के साथ शव को आपके घर भेजूंगा. सेना प्रमुख के तौर पर क्या मुझे यह कहना चाहिए?”

रावत का इस बात का मतलब बिलकुल सीधा था, अब से कोई भी सैनिक वहां आत्महत्या करने नहीं धकेला जायेगा, मतलब अब वो उनको वैसा ही जवाब देगा जैसा वो चाहते हैं. रावत ने कहा कि मेरा काम वहाँ के जवानों का मनोबल बढ़ाना है, उन्हें उत्साही बनाये रखना है ना कि उनको मरने के लिए छोड़ देना.

सेना प्रमुख से जब सेना के आगामी रणनीति के बारे में पूछा गया तो उन्होंने साफ़ और कड़े शब्दों में कह दिया कि,

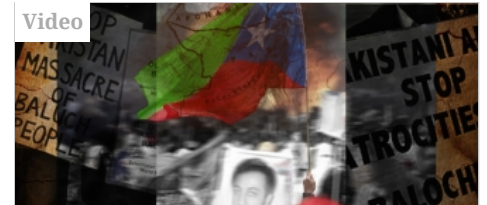
“मैं तो चाहता हूँ कि ये लोग पत्थर और पेट्रोल छोड़ कर हथियार चलाने पर आ जाये, उसके बाद का काम मेरा है. फिर मैं वही करूंगा जो मुझे करना चाहिए. फिर मैं कुछ चीजों को ले कर स्वतंत्र हो जाऊंगा. मैं खुले तौर पर फैसले करने में सक्षम हो जाऊंगा.”

पत्थर बाजों को लेकर पिछले कुछ समय में ही बहुत सी वीडियोज वायरल हुई हैं. जिनमें पत्थरबाजों ने सेना की जबाबी ऑपरेशन में आतंकियों को बचाकर निकाला है. इससे पहले भी सेना प्रमुख पत्थर बाजों को चेता चुके हैं कि **आतंकियों की मदद करने वाले पत्थर बाजों को उसी तरह ट्रीट किया जायेगा जिसे तरीके से आतंकवादियों की तरह.** इस बार सेना ने देश विरोधी हर आवाज की लय तोड़ने का प्रण किया दिखाई देता है. सेना ने पत्थरबाजों को उन्हीं की जुबान में समझाना और सिखाना शुरू कर दिया. मेजर गोगोई ने अपने साथियों, पोलिंग दल को बचने के लिए एक पत्थरबाज को जीप के आगे बांधकर ह्यूमन शील्ड की तरह इस्तेमाल किये जाने पर सेना प्रमुख ने इस पर कहा कि सेना को समस्याओं से लड़ने के वहाँ के माहौल के हिसाब से नए नए तरीके इजाद करने ही पड़ते हैं. इतना ही नहीं जीप पर युवक की मानव ढाल बनाने वाले मेज़र लितुल गोगोई को सम्मानित भी किया गया.

संकेत भी था, पद सँभालने के बाद से ही बिपिन रावत का ये रवैय्या घाटी के सभी विरोधियों की नींद उड़ाये हुए है. पिछले कुछ समय से देखने को मिला है कि सेना के कार्यों में राजनैतिक दखलंदाजी होती रही है लेकिन इसकी बंदी का संकेत साफ़ है. सैन्य घटनाओं पर किसी को उस सम्बन्ध में सेना को ज्ञान देने अधिकार लगभग खत्म होने पर आ रहा है. सीधी भाषा में राजनैतिक हस्तक्षेप बहुत कम हो गया है. आर्मी ने खुले आम आतंकियों और उनके



गरीबों का धर्मान्तरण हो रहा है तो गलती सरकार की है?



जेएनयू के ज्यादा पढ़े-लिखे लोगों अब दोबारा मत पूछना बलूचिस्तान का मसला क्या है?



यदि कश्मीर को आजाद कर दिया जाये तो पाकिस्तान का अगला कदम क्या होगा?

मददगारों की धरपकड़ शुरू कर दी है. किसी को नहीं बक्शा जा रहा है, जो भी घाटी की शांति में खलल डालेगा वो सेना से नहीं बच पायेगा. सेना ने अलगाववादियों का असल चेहरा सबके सामने लाना शुरू कर दिया है. घुसपैठियों की कमर टूटने लगी है, सेना की संख्या में बढ़ोतरी की गयी है, जिसका मतलब साफ़ है.

घाटी में बहुत सी समस्याएं अभी भी बाकी है. कश्मीर पूरा ही इस प्रकोप का शिकार है ऐसा कहना भी गलत होगा, सेना प्रमुख के मुताबिक कश्मीर के चार जिले ही इसके प्रकोप में हैं. बाकी के कश्मीर में स्थिति नियंत्रण में है. कश्मीर मुद्दे को अब ठोस समाधान की जरूरत है. अभी तक सही मायने में कश्मीर वो मुद्दा है जिसको कोई समाधान तक पहुंचा ही नहीं पाया है. वहां पाकिस्तान का प्रभाव नज़र आ ही जाता है जिसे पूरी तरह से समाप्त करना होगा. लोकतंत्र का आये दिन वहां मखौल उड़ता नज़र आता है. लोकतान्त्रिक देश में कश्मीर में लोकतंत्र पर ही तमाचे पड़ रहे हैं. सेना की भूमिका सुनिश्चित करनी ही होगी. सेना को अधिकार देने ही होंगे और इस चीज का भारतीय जनता ने सम्पूर्ण समर्थन भी दिया है. जनता ने सामने आ कर सेना का मनोबल बढ़ाया है. इसे बढ़ाये जाने की खूब जरूरत है तो नहीं तो ऐसे अराजक माहौल में जम्मू-कश्मीर राष्ट्रपति शासन की ओर है.

SHARE:

FACEBOOK

TWITTER

GOOGLE+

#Indian Army

#Terrorism

#Kashmir

#Pakistan

#Major Gogoi

Commentary

Write Your Comments



#JS_DIGEST



Is Cow Judiciary's fault-line? Hyderabad HC Tells The Cow Is "Sacred National Wealth"



मालिनी पार्थसारथी के चन्द्र सवालों के सामने प्रणव रॉय के 'फ्रीडम ऑफ़ स्पीच' वाले हाई वोल्टेज तमाशे की बत्ती गुल



Unprivileged White Hairs Of Lutyens Put Sleeves Up In Favor Of Pranav Roy And Declared The War Against Govt

About Jan-Satyagrah

Twitter

Facebook

Jan-Satyagrah - a digital media platform that accommodates the congeries of fiery thoughts, real issues, investigations, and litigations.

Email

editor@jansatyagrah.in

moderator.jansatyagrah@gmail.com

Whatsapp Number *

[Join Whatsapp](#)Tweets by [@Jan_Satyagrah](#)

**Jan-Satyagrah**
[@Jan_Satyagrah](#)

The amount of importance given to [@OfficeOfRG](#) by [@TOIndiaNews](#) ndtv etc. is a proof that many Indians prioritize entertainment over nation.

01 Jul

**Jan-Satyagrah**
[@Jan_Satyagrah](#)

Shameful

28 Jun

[Embed](#)[View on Twitter](#)Tweets by [@Jan_Satyagrah](#)